International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
Impact Factor- 3.866
Vol. 3, Issue 8, August 2016 ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
© Associated Asia Research Foundation (AARF) Publication
Website: www.aarf.asia Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

भारतीय राजनीति पर धर्म के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. चक्रधर ग. बागडे
राजनीति वज्ञान वभाग प्रमुख
शामराव बापू कापगते आर्ट्स कॉलेज, साकोली जि. भंडारा (म. रा.)

प्रस्तावना:

धर्म अलौ कक या आध्यात्मिक शक्ति में वश्वास है। भारत में धा र्मक क्षेत्र में बहुत बड़ी व वधता है। हालाँ क हिंदू धर्म यहां का बहुसंख्यक धर्म है, ले कन अन्य धा र्मक लोग जैसे मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध और सख भी यहां रहते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, भारतीय सं वधान ने धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को अपनाया। हालां क, कई राजनीतिक दलों के नेताओं ने अपने स्वयं के राजनीतिक हितों के लए धर्म की गलत व्याख्या की। वास्त वक धर्म जीवन का एक नैतिक तरीका है। ले कन चुनाव जीतने के लए राजनीतिक दल और उनके नेता धा र्मक संघर्ष छेड़ने की को शश करते हैं। कभी-कभी अल्पसंख्यकों को खुश करने के लए बहुमत के हितों की अनदेखी की जाती है। इस लए कभी-कभी बहुसंख्यक के लए अल्पसंख्यक को जानबूझकर नजरअंदाज कया जाता है। इसने अक्सर धा र्मक संघर्षों को जन्म दिया है, जिसने मानवता की छ व को धू मल कया है।

भारत में स्वतंत्रता-पूर्व काल में, ब्रिटिश शासकों ने अपने साम्राज्य को बनाए रखने के लए 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई। इस ब्रिटिश नीति ने देश में संप्रदायवाद और धा र्मक संघर्ष को बढ़ावा दिया, जिससे दो संप्रभु राज्यों, भारत और पा कस्तान के निर्माण के लए द्वैतवाद का उदय हुआ। ले कन भारतीयों ने वभाजन से बहुत कुछ नहीं सीखा है। उसके बाद भी, देश अभी भी धा र्मक तनाव की स्थिति में है। हम व वधता में एकता को भारत की वशेषता मानते हैं। हालां क, तथ्य यह है क भारतीय समाज जाति और धर्म से बहुत वभाजित है।

हमारे मूल भारतीय सं वधान में एक धर्मनिरपेक्ष राज्य का उल्लेख नहीं था। घटना स मति के एक सदस्य, श्री. शाह ने सुझाव दिया क 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' शब्द को सं वधान में शा मल कया जाना चाहिए। ले कन उनके सुझाव को खारिज कर दिया गया। ले कन **1976** में, जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं, **42** वें संशोधन की प्रस्तावना में **"धर्मनिरपेक्ष"** शब्द जोड़ा गया था। भारतीय सं वधान की प्रस्तावना में 'धर्मनिरपेक्ष' का उल्लेख है। इसके अलावा, धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को सं वधान के व भन्न वर्गों के रिकॉर्ड में शा मल कया गया है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। ले कन भारत में राजनीति और धर्म का अटूट संबंध है। स्वतंत्रता से पहले भी भारत में धा र्मक राजनीति मौजूद थी और ब्रिटिश शासकों द्वारा इसका लाभ उठाया गया था। उसके बाद, स्वतंत्रता के बाद की अव ध में भी राजनीति पर धर्म का प्रभाव महसूस कया गया है। वास्तव में, धा र्मक राजनीति भारतीय राजनीति की एक महत्वपूर्ण वशेषता बन गई है। हर राजनीतिक दल और उसके नेता अपने राजनीतिक हितों के

लए धर्म पर भरोसा करते दिखते हैं। धा र्मक क रवाद को आम चुनाव जीतने के लए राजनीतिक दलों द्वारा प्रोत्साहित कया जाता है। राजनीतिक दल धर्म और जातीयता के आधार पर चुनाव में उम्मीदवार खड़े करते हैं। परिणामस्वरूप, धा र्मक क रता बढ़ रही है। भारत में व भन्न राजनीतिक दलों का मूल आधार अभी भी धर्म है। मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा, अकाली दल, शवसेना, भारतीय जनता पार्टी आदि पर कुछ धर्मों का प्रभाव अ धक दिखाई देता है। इस शोध पत्र मे भारतीय राजनीति पर धर्म के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कया गया है।

अनुसंधान निबंधों के लए प्रयुक्त अनुसंधान व धयाँ:

वर्तमान शोध प्रबंध के लए उपयोग की जाने वाली जानकारी और तथ्यों को वषय से संबं धत व भन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों, समाचार पत्रों से संक लत कया गया है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1) भारतीय राजनीति पर धर्म के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2) भारत मे धा र्मक क रता बढ़ने के कारणों को खोजना।
3) शोध के निष्कर्षों के आधार पर धा र्मक राजनीति से छुटकारा पाने हेतु सुझाव देना।

अनुसंधान की आवश्यकता और महत्व:

भारत के व भन्न घटक राज्यों में धा र्मक, सांस्कृतिक और जातीय व वधता भी देखी जाती है। एक ही धर्म, संस्कृति या जातीयता के लोगों को एक घटक राज्य के एक व शष्ट क्षेत्र में एक साथ बांटा गया है। इससे उनके बीच एक स्वतंत्र पहचान बनी है। भारत के उत्तरपूर्वी राज्यों में अलगाववादी आंदोलनों को हमेशा देखा जाता है, क्यों क वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की को शश कर रहे हैं। भारत के कुछ हिस्सों में अक्सर नस्लीय और धा र्मक संघर्ष हुए हैं। राजनीतिक दल धर्म और जातीयता के आधार पर चुनाव में उम्मीदवार खड़े करते हैं। परिणामस्वरूप, धा र्मक क रता बढ़ रही है। भारत में व भन्न राजनीतिक दलों का मूल आधार अभी भी धर्म है। इन मुद्दोसे छुटकारा पाने हेतु भारतीय राजनीति पर धर्म के पड़ने वाले प्रभाव को समजना जरूरी है। इस उद्देशसे शोध का वषय महत्वपूर्ण है।

धर्म का अर्थ:

सामान्य तौर पर, समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से धर्म का अर्थ बताते समय, धर्म को वैश्विक दृष्टिकोण से माना जाता है। तो यहाँ धर्म का अर्थ उसी वैश्विक दृष्टिकोण से समझाया गया है। टायलर के अनुसार, "आध्यात्मिक शक्ति में वश्वास धर्म है।" हॉवेल के अनुसार, "अलौ कक शक्तियों में व्यक्तियों का वश्वास धर्म है।" बिल्स और हूज़र के अनुसार, 'धर्म मुख्य रूप से ब्रह्मांड की व्यवस्थित धारणा की प्रति क्रया है। यह मनुष्य के संदर्भ में व भन्न घटनाओं की भ वष्यवाणी करने और समझने के साथ-साथ चंता को दूर करने के लए एक उपकरण है, जो स्पष्ट रूप से प्रकृति के नियमों के अनुसार है। 'भे लनोवस्की के अनुसार। यह प्रतिकूलता के भय से खुद को दूर करता है। वास्तव में, धर्म मानवीय आशाओं और आकांक्षाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि उनके डर का परिणाम है। "

भारतीय राजनीति पर धर्म का प्रभाव :

वास्त वक धर्म शक्ति का एक एकीकृत बल है। यह स्पष्ट था क यह सांस्कृतिक तत्व लोगों को एक साथ लाता है। समान वश्वास, धा र्मक त्योहार, अनुष्ठान कई लोगों को एक साथ दोस्ताना तरीके से पेश करते हैं। धर्म और राजनीति का एक-दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है। हालां क, यह सच है क धर्म और संप्रदायवाद भारत में वघटन की सबसे प्रभावशाली ताकत हैं। कोई भी धर्म क रता, हिंसा, घृणा नहीं सखाता है। अगर भारत जैसे बहुधर्मी देश की एकता को केवल 'धर्म 'के कारण खतरा हो तो क्या दुर्भाग्यपूर्ण बात है। ले कन यह एक कड़वा सच है। ब्रिटिश शासन के अंत तक, भारत में सांप्रदायिकता व्याप्त थी। मुस्लिम लीग, एक राजनीतिक संगठन, जिसने इस्लाम का प्रतिनि धत्व कया था, ने अपनी राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लए द्वैतवाद का सद्धांत प्रस्ता वत कया। यह महसूस करते हुए क वे भारत सरकार में शा मल नहीं हो सकते, लीग ने इस्लामवादियों के लए एक अलग राज्य की मांग की। इसके लए, हिंसा के मार्ग का उपयोग कया गया था। **1946** के बाद, भारत में एक बहुत ही वस्फोटक स्थिति पैदा हुई। उस दबाव में भारत के वभाजन को स्वीकार करना पड़ा। इससे भारत का वभाजन हुआ और पा कस्तान का गठन हुआ, ले कन जातिवाद की समस्या खत्म नहीं हुई। भारत में पा कस्तान से ज्यादा इस्लामवादी हैं। **20%** से अ धक आबादी अल्पसंख्यक धा र्मक समूह है।

सं वधान ने प्रत्येक भारतीय को धर्म की स्वतंत्रता का अ धकार दिया है। धर्म निजता और धर्म का मामला है और राज्य कसी भी तरह से हस्तक्षेप नहीं करते हैं। धर्म और राजनीति अलग हैं, ले कन व्यवहार में, धर्म का राजनीतिकरण कया जाता है। सांप्रदायिक राजनीतिक दल के साथ-साथ तथाक थत धा र्मक दल भी राजनीतिक लाभ के लए धर्म के नाम पर राजनीति करते हैं। जातीय समूहों की तरह, आदिवासी समूह भारत की राजनीतिक प्र क्रया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। इन सांप्रदायिक समूहों ने पूरी राजनीतिक प्र क्रया को वकृत रूप दे दिया है। कुछ वचारकों के अनुसार, वभाजन के बाद हिंदू-मुस्लिम मुद्दों को हल कया जाएगा; ले कन वास्त वकता अलग है। भारत के वभाजन से हिंदू-मुस्लिम सुलह के सभी प्रयास वफल हो गए हैं।

हिंदू सांप्रदायिकता के रूप में यहां के मुसलमान पा कस्तान की निंदा करते हैं। मुस्लिम सांप्रदायिक राजनीतिज्ञ वशेष प्रावधानों के लए एक राजनीतिक दल के साथ सौदेबाजी करते हैं। एक-दूसरे के बारे में पूर्वाग्रही राय हिंदू और मुस्लिमों के बीच सौहार्द बनाने की मुश्किलें हैं। सांप्रदायिकता और क्षेत्रवाद भी सांप्रदायिक रूप ले रहा है। सांप्रदायिक राजनीति में हिंदू-नव-बौद्ध, हिंदू- सख, हिंदू-ईसाई संघर्ष हो रहे हैं। यह भारत की अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाजशास्त्र पर प्रभाव डाल रहा है। जातिगत तनाव, तुच्छ कारणों से या धा र्मक भावनाओं को ठेस पहुंचाने या मौकों पर प्रतिमाओं को अप वत्र करने के लए बनाए जाते हैं। राजनेताओं पर पूंजी लगाकर सांप्रदायिकता माहौल को गर्म करती है। इसका परिणाम भयावह सांप्रदायिक दंगे हैं। जातीय दंगे हमेशा सांप्रदायिक राजनीति का हिस्सा नहीं होते हैं। जातीय दंगे स्थानीय कारणों जैसे अराजकता के कारण भी होते हैं।

सांप्रदायिकता धर्म की राजनीति है। धर्म का राजनीतिकरण करने वाला वर्ग रूढ़िवादी, सांप्रदायिक, मेहनती, पुनरुत्थानवादी कहलाता है। सांप्रदायिक वर्ग अपनी राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लए जनजाति के आम लोगों को पकड़ते हैं। जनजाति की आ र्थक और व्यावहारिक मांग सांस्कृतिक मांगों की छाप पैदा करती है। यह अपने स्वयं के राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लए जनता को एकजुट करने के लए महान इतिहास के रंगों का उपयोग करता है। यदि राजनीतिक शक्ति हा सल नहीं की जाती है, तो जितना संभव हो उतना भागीदारी

को हटा दिया जाता है। धर्म के आधार पर सत्ता के लए लोगों को संगठित करने और इस तरह वपक्ष से लड़ने की प्र क्रया को सांप्रदायिक राजनीति कहा जाता है। भारत जैसे बहुधर्मी देश में हर जगह सांप्रदायिक राजनीति होती है। धा र्मकता की पगड़ी वाले पछड़े पारंपरिक देश में, यह समस्या स्पष्ट है। प्रत्येक जनजाति को इस बात का भय होता है क उनके जनजाति के हितों को कसी अन्य जनजाति द्वारा खतरे में डाल दिया जाएगा। यह इस असुरक्षा की वजह से है क सांप्रदायिकतावादी राजनीति करते हैं। सांप्रदायिकतावादी वर्ग अपने समुदाय को आ र्थक और राजनीतिक शक्ति का अ धकतम हिस्सा देने का प्रयास करता है। चूं क भारत में कई ऐसे समूह हैं, जिनके बीच प्रतिस्पर्धा और संघर्ष बढ़ता है। जैसा क आम लोग इस भावनात्मक चुनौती का जवाब देते हैं, अंतर-जातीय संघर्ष तेज हो जाते हैं। राष्ट्र का वघटन सांप्रदायिक राजनीति का अंतिम परिणाम है। मुस्लिम लीग की सांप्रदायिक राजनीति भारत के वभाजन के कारण हुई, ले कन वभाजन के बाद भी, सांप्रदायिक राजनीति बढ़ती रही है।

भारत में स्वतंत्रता के बाद की अव ध में, व भन्न सांप्रदायिक समूहों ने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लए कड़ी मेहनत की। उनमें से कुछ बहुत ही उग्र और हिंसक थे। भारतीयों के बीच सांप्रदायिक जहर फैलाने के लए, व भन्न सांप्रदायिक चरमपंथी समूहों ने लोगों की धा र्मक भावनाओं को उकसाकर और जनजातियों को एक साथ लाकर अपने उद्देश को प्राप्त करने की को शश की है। इसका इतिहास खूनी है और इसने भारतीय एकता को बा धत कया है। आइए व भन्न जनजातियों के हिंदुओं, सखों और मुसलमानों की राजनीति पर एक नज़र डालें।

(1) हिंदू सांप्रदायिक राजनीति:

स्वतंत्रता के बाद, वश्व हिंदू परिषद, मराठा महासंघ, मुस्लिम लीग, शवसेना, वंदे मातरम, भाजपा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जमात-ए-इस्लामी, द लत मुस्लिम महासंघ, बहुजन समाज पक्ष आदि का गठन कया गया, जिन्होंने इतिहास के संचालन में हितों को ध्यान में रखते हुए नीतियां बनाईं। राजनीतिक दलों और सांप्रदायिक संगठनों ने अपनी नीतियों और मांगों की जोरदार घोषणा की। कुछ मामलों में, कुछ सांप्रदायिकों ने आक्रामक रुख अपनाया। जैसे शाहबानो मामला, बाबरी मस्जिद, राम जन्मभू म, मथुरा, गोहत्या पर प्रतिबंध, समान नागरिक अ धकार आदि। **1989-90** के आम चुनाव हिंदुत्व के मुद्दे पर लड़े गए। भाजपा ने इसमें बड़ी सफलता हा सल की। वश्व हिंदू परिषद ने बाबरी मस्जिद, राम जन्मभू म मामले में उच्च न्यायालय के फैसले को खारिज कर दिया और ववादित स्थल पर राम मंदिर के निर्माण की घोषणा की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने राम जन्मभू म, धर्मज्योत, हेडगेवार शताब्दी महोत्सव जैसे हिंदुत्ववादी कार्यक्रम का फैसला कया है। यद्य प सांप्रदायिकता और नस्लवाद के मानदंड अलग हैं, ऐतिहा सक यादों की व शष्ट जागरूकता, असमानता की राजनीति, भाषा वज्ञान और क्षेत्रीयता की मध्ययुगीन परंपरा ने सांप्रदायिक और नस्लवादी व्यवहार में बहुत अंतर नहीं कया। यद्य प महाराष्ट्र में हिंदुत्ववादी भक्तों का रुख मुस्लिम वरोधी है, ले कन वे सामाजिक सुधार की परंपरा को भी नष्ट करना चाहते हैं जो अंध वश्वास और जाति व्यवस्था को खत्म करना चाहता है। महाराष्ट्र के संदर्भ में, मराठा महासंघ द्वारा आर क्षत सीटों और नाम बदलने, अल्पसंख्यकों और द लतों के खलाफ हिंसक अ भयानों के मुद्दे पर अन्य हिंदू सांप्रदायिक संगठनों द्वारा उठाए गए द लत वरोधी रुख की भू मका आक्रामक थी।

सांप्रदायिक मान सकता कैसे बनती है, यह बताते हुए प्रो. बि पनचंद्र का कहना है क भारत जैसे वषम समाज में, धर्म, जाति और भाषा के आधार पर जो मतभेद पैदा होते हैं, वे अपने हितों को साधने की इच्छा से पैदा होते हैं, इस प्रकार बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक जनजातियों के बीच प्रभुत्व और अधीनता का रिश्ता बनता

है। अल्पसंख्यक जनजाति हा शए पर हैं। बहुसंख्यक जनजाति हावी होने की को शश करती है। आधुनिकीकरण से आ र्थक प्रतिस्पर्धा और शक्ति संघर्ष होता है। वे सत्ता पाने के बाद ही हितों का वर्चस्व बनाने की को शश करते हैं। यह राष्ट्रीयता के दर्शन, धर्म और संस्कृति के उच्चीकरण पर आधारित है। बहुमत की सांप्रदायिकता को राष्ट्रवाद के रूप में प्रस्तुत कया जाता है। महाराष्ट्र के पुरस्कार का सांप्रदायिकरण, हिंदुत्ववादी इतिहासकारों का लेखन, एक-दूसरे के धर्म के बारे में हिंदुओं और मुसलमानों के लेखन से पता चलता है क बहुसंख्यक जनजातियाँ अपने इतिहास को वकृत करके सांप्रदायिक मान सकता का पोषण करती हैं। बहुमत हमारे धर्म, संस्कृति, अन्याय, रीति-रिवाजों और सामाजिक उत्पीड़न को भी आदर्श बनाता है।

(2) सख सांप्रदायिक राजनीति**:**

सख सांप्रदायिक राजनीति सांप्रदायिक राजनीति का एक और तत्व है। पंजाब में बहुसंख्यक सख हैं। भारत में कुल सख आबादी लगभग डेढ़ करोड़ है, जिसमें से **80** प्रतिशत अकेले पंजाब में है। **16** वीं शताब्दी में, गुरु नानक देव ने हिंदू धर्म में सुधार आंदोलन की दृष्टि से सख संप्रदाय की स्थापना की। आजादी से पहले, हिंदुओं और सखों की दुश्मनी इतनी मजबूत नहीं थी क इसे महसूस कया जा सके। भारत के वभाजन के कारण, पश्चिम पंजाब से हिंदुओं और सखों को भारत में पलायन करना पड़ा। सखों की सबसे अच्छी धा र्मक संस्था शरोम ण गुरुद्वारा निवारण स मति और अकाली दल, पंजाब में सख सांप्रदायिक राजनीति में शा मल थे। अंग्रेजों ने सख सांप्रदायिक राजनीति को बढ़ावा दिया। सखों के लए एक अलग निर्वाचन क्षेत्र प्रदान कया। स्वतंत्रता के बाद की अव ध में, हिंदू और सख जनजातियों के बीच राजनीतिक शक्ति संघर्ष बढ़ गया। **1966** में, पंजाब का वभाजन हुआ और सख और बहुसंख्यक पंजाब राज्य बने। बाद में, पंजाब में अमीर जाट और सख कसानों ने पंजाब की राजनीति की बागडोर संभालने के लए सांप्रदायिकता का सहारा लया। परिणामस्वरूप, पंजाब की स्थिति बिगड़ गई। सख संप्रदायों ने एक स्वतंत्र सख राज्य, खा लस्तान की मांग की। संत भद्रनवाले ने भी कांग्रेस पार्टी और अकाली दल को हराने के लए चरमपं थयों को प्रोत्साहित कया। अकाली दल की आक्रामकता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई। सख सांप्रदायिकता की चरमपंथी प्रवृत्ति ने भारत की भौगो लक अखंडता और एकता को खतरे में डाल दिया।

(3) मुस्लिम सांप्रदायिक राजनीति**:**

मुस्लिम लीग, जमात-ए-मुशावर, बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी जैसे सांप्रदायिक संगठनों ने सांप्रदायिकता को तीव्र कया। यह संगठन आक्रामक हिंदू सांप्रदायिकता के लए एक मजबूत मुस्लिम सांप्रदायिक प्रति क्रया थी। उन्होंने 'इस्लाम खतरे में है' के नारे के साथ आम मुसलमानों के मन में असुरक्षा, भय और आक्रामकता की भावना पैदा की। तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को न्याय देने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले की प्रति क्रया मुस्लिम सांप्रदायिकता की अ भव्यक्ति थी। उन्होंने आंदोलन के माध्यम से सरकार पर दबाव डाला और संसद को निर्णय को निरस्त करने वाला कानून बनाने के लए मजबूर कया। मुस्लिम सांप्रदायिकता की आक्रामकता एक बार फर सलमान रुश्दी की पुस्तक 'सैनेटिक वर्सेस' के संदर्भ में देखी गई। इस्लामी अलगाववाद ने कश्मीर में अलगाववादी आंदोलन को जन्म दिया। कुछ इस्लामी राष्ट्र और पा कस्तान अलगाववादी और संप्रदायवादी राजनीति का खुलकर प्रचार और समर्थन कर रहे हैं।

मतदान पर जातिवाद का भी प्रभाव पड़ा है। भारत में आम चुनावों में मतदाताओं के व्यवहार का कई बार अध्ययन कया गया है। इससे पता चलता है क मतदाता की जाति एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। यहां

तक क जब कोई उम्मीदवार चुनाव के लए खड़ा होता है, तो वह उसी क्षेत्र में खड़ा होता है, जहां उस जाति के लोग अ धक होते हैं। बिहार राज्य के **53** लोकसभा क्षेत्रों में से **33** में, **1954** से **1991** तक के **9** आम चुनावों में, एक जाति वशेष के उम्मीदवार लगातार चुने गए। राजनीतिक दल भी मतदाताओं से संपर्क करके सौदे करते हैं, जो सत्तारूढ़ दलों के माध्यम से अपने मतपत्र डालते हैं। डोनाल्ड स्मिथ के अनुसार, मजबूत जातीय भावनाएं भारत में मतदान के बारे में सामूहिक निर्णय लेने की प्रवृत्ति का संकेत देती हैं। यह वशेष रूप से अनुसू चत जातियों और अनुसू चत जनजातियों, शहरी म लन बस्तियों और अल्पसंख्यक जनजातियों के ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाता है। राजनीतिक दल उस निर्वाचन क्षेत्र में उसी जाति के उम्मीदवार को मैदान में उतारते हैं जहाँ जाति प्रधान होती है। कैबिनेट बनाते समय उस समूह के हितों को प्राथ मकता दी जाती है। जाति संगठन अपने लोगों को जागृत करते हैं और अपनी राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करते हैं। वे राजनीतिक पार्टी पर दबाव डालकर सांख्यिकीय आधार पर अपना हिस्सा पाने की को शश करते हैं। जाति संघों ने ग्रामीण शक्ति सहकारी स मतियों, पंचायती राज और राज्य स्तरीय वधायिकाओं और कार्यकारी निकायों में घुसपैठ की है। महाराष्ट्र राज्य में, मराठी जाति में कांग्रेस का वर्चस्व है। यही **80%** आबादी सत्ता में है। जहां कोई जाति प्रधान नहीं है, वहां जातियों के एकजुट मोर्चे का गठन कर सत्ता बनाई जाती है। इतना ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक अ धकारियों और न्यायाधीशों की नियुक्ति पर भी सांप्रदायिक राजनीति का प्रभाव पड़ता है।

बोडेल के अनुसार, एक राजनीतिक समाजशास्त्री, संगठित सामाजिक समूह जो अपने हित में सार्वजनिक नीति को प्रभा वत करने की को शश करते हैं, अपने घटकों के लाभ के लए राजनीतिक नेताओं के साथ संपर्क स्था पत करते हैं, शासकों पर अपने समूह के अनुरूप नीतियों को लागू करने के लए दबाव बनाने का प्रयास करते हैं। भारत में कई जातियाँ और जनजातियाँ अनुसू चत जातियों में शा मल होना चाहती हैं। अगर ऐसी जातियां सत्ता में हावी हैं, तो मान लीजिए क वे शा मल हैं। कुछ पछड़ी जातियों के लए आर क्षत सीटों की नीति के साथ-साथ कुछ सवर्ण जातियों के वरोध के कारण, कुछ जातियों और जनजातियों के प्रबल वरोध के कारण कई वर्षों तक मंडल आयोग लागू नहीं कया जा सका। इस प्रकार जाति का निर्णय अप्रत्यक्ष रूप से जाति समूहों द्वारा नियंत्रित कया जाता है। शाहबानो मामले में, मुस्लिम रूढ़िवादी समूहों ने सरकार पर सुधार के लए दबाव डाला। वरोध के कारण, मराठवाड़ा वश्व वद्यालय का कई वर्षों तक नाम नहीं बदला जा सका। 'रिडल्स' के मामले में भी, हिंदू-सवर्ण आंदोलन ने सरकार को पुस्तक प्रका शत करने के अपने निर्णय को बदलने के लए मजबूर कया था।

निष्कर्ष:

अध्ययन में पाया गया क, भारतीय राजनीति पर धर्म का प्रभाव निस्संदेह है। प्रत्येक राजनीतिक दल प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से धर्म का उपयोग करता है। वे सर्फ चुनाव में सफल होना चाहते हैं। इस तरह की संकीर्ण प्रवृत्ति ने भारत में धर्मनिरपेक्षता के राज्य के लक्ष्य को कमजोर कर दिया है। भारत में धर्म कुछ राजनीतिक दलों का मुख्य आधार है। कई राजनीतिक दल चुनाव लड़ते समय अपने धर्म को वशेष महत्व देते हैं। राजनीतिक दल वशेष रूप से निर्वाचन क्षेत्र की धा र्मक पृष्ठभू म के आधार पर अपनी उम्मीदवारी की घोषणा करते हैं। कई राजनीतिक दल अप्रत्यक्ष रूप से धा र्मक संघर्ष को भड़काने की को शश करते हैं। कई धर्मों के धा र्मक नेता राजनीति में भाग लेते हैं और कसी वशेष पार्टी को वोट देने की अपील करते हैं। वे अ भयान भी चलाते हैं।

राजनीतिक दलों को अक्सर राजनीतिक हितों के लए धा र्मक संघर्षों में भाग लेते देखा जाता है। चुनावों में, वोट प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष धर्म के नाम पर दिए जाते हैं।

सुझाव:

1) राजनीतिक दल अप्रत्यक्ष रूप से धा र्मक संघर्ष को भड़काने की को शश करते हैं। इस बात को लोगोकों समजना होगा।
2) प्रत्येक राजनीतिक दल प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से धर्म का उपयोग करता है। वे सर्फ चुनाव में सफल होना चाहते हैं। इस लए मतदान करते समय कसीभी बात से प्रभा वत नहीं होना चाहिए।
3) प्रशासनिक अ धकारियों और न्यायाधीशों की नियुक्ति पर भी सांप्रदायिक राजनीति का प्रभाव पड़ा है। ये राष्ट्र हित मे नहीं हैं। इस बात को लोगोकों समजना होगा।
4) राजनीतिक दल वशेष निर्वाचन क्षेत्र में उसी जाति के उम्मीदवार को मैदान में उतारते हैं जहाँ उसकी जाति के लोग अ धक मात्रा मे हो। इस लए मतदान कर के सही उम्मीदवारकाही चुनाव करना चाहिए।

ग्रंथ सूची:

1) एम. लक्ष्मीकांत, भारत की राजव्यवस्था - स वल सेवा एवं अन्य राज्य परीक्ष हेतु,संस्करण प्रथम
2) एम आहुजा एल, जनरल इलेक्शन इन इं डया इलेक्टोरल पॉ लटिक्स, इलेक्टोरल रिफार्मस एण्ड पा लटिकल पार्टीज, आईकन पब्लिकेशन्स, दिल्ली- 1999
3) मीन रॉय इलेक्टोरल, इलेक्शन प्रोसेस एण्ड आउटकम्स वोटिंग बिहे वयर एण्ड पा लटिक्स इन इण्डिया कस्ट टेण्डस, दीप एण्ड दीप, दिल्ली- 2000
4) एनसीईआरटी पुस्तक कक्षा 12 राजनीति वज्ञान - स्वतंत्र भारत में राजनीति
5) अजना बनर्जी , इलेक्टोरल सस्टम्स, ग्लोबल वजन पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली- 2008

समाचार पत्र: नवभारत, लोकमत, टाइम्स ऑफ इं डया

वेबसाइट:

- https://www.pravakta.com/the-utility-of-religion-in-politics/
- https://www.pravakta.com/communal-riots-in-indian-politics/
- https://www.inkhabar.com/opinion/3166-Politics-for-religion-or-religion-for-politics